64

यीशु की गिरफ्तारी

(26:47-56)

जैतून के पहाड़ पर, यीशु और इकट्ठे हुए ग्यारह प्रेरितों के साथ पकड़वाने वाला यहूदा यीशु को गिरफ्तार करने के लिए भीड़ लेकर आया।

यहूदा का विश्वासघात का चुम्बन (26:47-50)

[47]वह यह कह ही रहा था, कि देखो, यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियां लिए हुए आई। [48]उसके पकड़वाने वाले ने उन्हें यह पता दिया था कि जिस को मैं चूम लूं वही है; उसे पकड़ लेना। [49]और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा; हे रब्बी नमस्कार; और उस को बहुत चूमा। [50]यीशु ने उस से कहा; हे मित्र, जिस काम के लिए तू आया है, उसे कर ले। तब उन्होंने पास आकर यीशु पर हाथ डाले, और उसे पकड़ लिया।

आयत 47. आयत 46 में यीशु की आज्ञा के कठोर सुर से भीड़ के दीपकों और मशालों के साथ आने के दृश्य की प्रेरणा मिली होगी (यूहन्ना 18:3)।[1] मत्ती ने लिखा है कि **वह यह कह ही रहा था, कि देखो, यहूदा** अपने साथी लेकर गतसमनी में आ गया। मतलब यह है कि यदि यीशु ने आगे बढ़ रही भीड़ को न देखा होता तो उसने अपने चेलों से और बातें करनी थी।

यहूदा का आना 26:21 में यीशु की भविष्यवाणी का पूरा होना था कि "जब वे खा रहे थे, तो उस ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।" और स्पष्ट कहें तो उसने संकेत दिया था कि यहूदा ने यह विश्वासघाती कार्य करना था (26:25)। सुसमाचार के अन्य सहदर्शी विवरणों के साथ-साथ मत्ती यह जोर देते हुए कि वह **बारहों में से एक था** यहूदा के विश्वासघात की सीमा का संकेत देता है (देखें मरकुस 14:43; लूका 22:47)।

यहूदा **महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़** के साथ था। भीड़ में यहूदी मन्दिर के पहरेदारों के दल के साथ-साथ (लूका 22:52) रोमी सैनिकों की टुकड़ी (यूहन्ना 18:3, 12) भी थीं। लगभग 600 पुरुषों की एक रोमी टुकड़ी पूरी ताकत के साथ आई थी, जिसमें दस दलों में 6,000 पुरुष होते थे। रोमी दल मन्दिर के पहरेदारों के साथ इसलिए भेजे गए होंगे क्योंकि पहरेदार यीशु को पकड़ने के पहले प्रयास से खाली हाथ लौट गए थे (यूहन्ना 7:32, 44-46)। ये सुनिश्चित करने के लिए कि यीशु को मुर्दा नहीं, बल्कि जीवन लेकर आएं, वे साथ आए होंगे।

आयतें 48, 49. यहूदा दूसरों के आगे-आगे आता हुआ दिखाई देता है। मत्ती ने अपने पकड़ने वालों के सामने यीशु के इस तरह जाने की बात नहीं की जैसे यूहन्ना ने लिखी है (यूहन्ना 18:4-9)। भीड़ के अपने पास आने की प्रतीक्षा करने के बजाय प्रभु उनके पास आप चला गया

और पूछने लगा, ''किसे ढूंढ़ते हो?'' (यूहन्ना 18:4)। जब उन्होंने उत्तर दिया, ''यीशु नासरी को,'' तो उसने कहा, ''मैं हूं।'' शायद उसकी निडरता से चकित, भीड़ पीछे हो गई और भूमि पर गिर गई (यूहन्ना 18:5, 6)। एक बार फिर यीशु ने पूछा, ''तुम किसको ढूंढ़ते हो?'' और उन्होंने जब फिर उत्तर दिया, ''यीशु नासरी को,'' तो उसका उत्तर था, ''मैं तो तुम से कह चुका हूं कि मैं ही हूं, यदि मुझे ढूंढ़ते हो तो इन्हें जाने दो'' (यूहन्ना 18:7, 8)।

यीशु अपने आपको उन्हें सौंपकर न केवल अपने प्रेरितों की रक्षा कर रहा होगा, बल्कि वह यहूदा के लिए उसे उससे विश्वासघात करना भी अनावश्यक बना रहा था। परन्तु यहूदा ने जो योजना बनाई थी उसे अंजाम देने का ठान रखा था। आरम्भिक बातचीत के बाद यहूदा सिपाहियों के साथ किए गए प्रबन्ध के अनुसार **पता** देने के लिए **यीशु** के पास आकर **उसको चूमा**। यीशु अपने चेलों से बहुत अलग नहीं लग रहा होगा, विशेषकर अंधेरे में। इसलिए इस पर एक स्पष्ट चिह्न का निर्णय लिया गया था, जिससे संकेत मिलना था कि किसे **पकड़** लेना है।

यीशु ने उससे पूछा, ''हे यहूदा, क्या तू चूमा लेकर मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है?'' (लूका 22:48)। चुम्बन के यहूदा के इस्तेमाल ने उसके विश्वासघात को पक्का कर दिया (देखें 2 शमूएल 20:9, 10)। आखिर चुम्बन एक अभिवादन था जो मित्रता का संकेत देता था। इसके लगाव के एक कार्य के होने का प्रमाण आरम्भिक मसीही लोगों में इसके इस्तेमाल से मिलता है (रोमियों 16:16; 1 कुरिन्थियों 16:20; 2 कुरिन्थियों 13:12; 1 थिस्सलुनीकियों 5:26; 1 पतरस 5:14)। **चूमा** के लिए यूनानी क्रिया शब्द आयत 48 में *phileō* से आयत 49 में *kataphileō* बन जाता है। बाद का यह शब्द ''लगाव के विस्तृत दिखावे का सुझाव देता है''[2] (देखें लूका 7:38, 45; 15:20; प्रेरितों 20:37)। यहूदा के विश्वासघात की गहराई उसके यीशु को हे रब्बी कहने से भी बढ़ गई, जिसका अर्थ ''मेरे प्रभु, स्वामी।''

आयत 50. केवल मत्ती ही अकेला लेखक था जिसने जोड़ा कि **यीशु** ने यहूदा को हे **मित्र** कहा। ''मित्र'' के लिए यहां इस्तेमाल शब्द अधिक नज़दीकी शब्द (*philos*) नहीं बल्कि (*hetairos*) है जिसका बेहतर अनुवाद ''साथी'' है। इस शब्द का इस्तेमाल डांट के रूप में हो सकता है, जो कि यहां दी गई है (20:13 पर टिप्पणियां देखें)।

मत्ती यह लिखने वाला अकेला लेखक था कि यीशु ने यहूदा से कहा, ''**जिस काम के लिए तू आया है कर ले।**'' हमारे लिए यूनानी भाषा में यह बात अस्पष्ट है और इसका अनुवाद एक प्रश्न के रूप में हो सकता है। उदाहरण के लिए, NKJV में है, ''तू क्यों आया है?'' परन्तु यीशु के परिस्थिति को जानने और नियन्त्रण होने के प्रकाश में, यूनानी धर्मशास्त्र में ये बात सम्भवतया समझ आ जाती है। यीशु यहूदा को पूछने के बजाय कि वह वहां क्यों था, विश्वासघात और गिरफ्तारी के साथ आगे बढ़ने को कह रहा था।[3]

आक्रमण की पतरस की तलवार (26:51-54)

[51]और देखो, यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के दास पर चलाकर उस का कान उड़ा दिया। [52]तब यीशु ने उस से कहा; अपनी तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे। [53]क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह

स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? [54]परन्तु पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी होंगी?

आयत 51. यीशु ने अटारी वाले कमरे में अपने चेलों को बताया था कि समय आ रहा है कि "जिस के पास तलवार न हो, वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले" (लूका 22:36)। उनके अटारी वाले कमरे में से जाने से थोड़ा पहले, "उन्होंने कहा, देख प्रभु यहां दो तलवारें हैं, उसने उनसे कहा, बहुत हैं" (लूका 22:38)[4] अब लूका 22:49 के अनुसार कुछ चेलों ने पूछा कि यीशु को वे तलवारें इसलिए चाहिए थीं कि "हम तलवार चलाएं।"

जोशीले पतरस ने प्रभु के प्रश्न का उत्तर देने की राह नहीं देखी (यूहन्ना 18:10)। उसने जल्दी से **तलवार** जो उसके पास थी **खींच ली** और **महायाजक के दास पर चला** दी (मलखुस; यूहन्ना 18:10)। पतरस ने सोचा होगा कि यीशु ने कहा था कि समय आ रहा है जब उन्हें तलवार की आवश्यकता होगी, तो निश्चय ही उसका उनसे इसका इस्तेमाल करने का इरादा होगा। पतरस के काम ने यह साबित कर दिया कि बाद में चाहे वह पीछे हट गया पर उसके कहने का अर्थ वही था जो उसने यीशु के लिए मरने की बात कही थी (26:35)। अनुभवी रोमी सैनिकों और मन्दिर के पहरेदारों के सामने एक या दो तलवारों ने क्या कर लेना था? पतरस तो वास्तव में प्रभु के लिए मरने को तैयार था।

तलवार निकालकर पतरस ने [मलखुस का] **कान उड़ा दिया**। यदि मलखुस ने पीछे हटने का प्रयास न किया होता तो यह जानलेवा हमला होना था; पतरस के निशाने पर उसका सिर रहा होगा। यीशु ने सबको विशेषकर उन्हें जो उसे पकड़ने को आए थे, मलखुस का काटा हुआ कान जोड़कर हैरान और चकित कर दिया होगा (लूका 22:51)। इस आश्चर्यकर्म के द्वारा उसने प्रेरितों के प्राण बचा लिए होंगे।

आयत 52. हथियार लाने की पुकार के बजाय जिसकी उसे यीशु से उम्मीद होगी, पतरस प्रभु की डांट सुनकर कि "**अपनी तलवार काठी में रख ले**" स्तब्ध रह गया होगा। यीशु ने बार बार अपनी गिरफ्तारी और मृत्यु की भविष्यवाणी की थी, सो इसे रोकने का पतरस का प्रयास बेकार था। इसके अलावा मसीह का राज्य आत्मिक होना था, इसके अनुयायियों को लड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी (यूहन्ना 18:38)।

यीशु ने पतरस से कहा, "**क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे।**" रॉबर्ट एच. माउंस ने टिप्पणी की है, "यह एक लोकोक्ति लगती है (तुलना उत्पत्ति 9:6 और प्रकाशितवाक्य 13:10) और इस कारण इसकी व्याख्या संदर्भ को बड़े ध्यान में रखते हुए की जाए। यह सामान्य नियम नहीं है जो किसी भी समय बचाव कार्य की मनाही करता है।"[15] अन्यों का मत है कि यीशु की बात लोकोक्ति से कहीं बढ़कर थी। वह यह मान लेते हैं कि यह यशायाह की अरामी तरगुम से लिया गया था, जिसमें कहा गया है, "देखो, तुम सब जो आग जलाते हो, जो तलवार लेते हो; जाओ, उस आग में गिर जाओ जो तुम ने जलाई है, और उसी तलवार से काटे जाओ जो तुम ने उठाई है। मेरी बात से ... तुम्हें यही मिला है कि तुम अपने विनाश को लौट जाओ।"[16] वे और बताते हैं कि यीशु की गिरफ्तारी में परमेश्वर की इच्छा पूरी हो रही थी और इसे रोकने के लिए चेले कुछ नहीं कर सकते थे।[17]

आयत 53. फिर यीशु ने पूछा, **''क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?''** उसके प्रश्न ने उन्हें याद दिलाया कि यदि वह अपनी गिरफ्तारी को रोकना चाहता तो पिता से विनती करके स्वर्गीय सेनाओं की सहायता मांग सकता था।[8] परमेश्वर के पुत्र को अपने शत्रुओं को हराने के लिए अपने निर्बल और बचावहीन चेलों की सहायता की आवश्यकता नहीं थी। उसे ''किसी व्यक्ति के अदने से प्रयास जो किसी सेवक का कान काटने से बेहतर कुछ नहीं कर सकता था'' किसी सहारे की आवश्यकता नहीं थी।[9]

यीशु ने स्वर्गदूतों की बात उन्हीं शब्दों में बताई, जिसे चेले आसानी से समझ सकते थे। रोमी पलटन में 6,000 के लगभग सिपाही होते थे जो शक्तिशाली लोगों की बड़ी सेना थे, सो बारह पलटनों में 72,000 के लगभग स्वर्गदूत होने थे जो एक शक्तिशाली सेना होनी थी।[10] यीशु को पकड़ने के लिए भेजे गए रोमी पलटन और यहूदी मन्दिर के पहरेदारों ने ऐसी सेना से तुरन्त और निर्णायक ढंग से पराजित हो जाना था।

यीशु ने अपने पिता की इच्छा को पूरा करने का ठाना हुआ था और वह क्रूस पर मृत्यु तक आज्ञा मानते हुए अपने आपको सौंप रहा था। उसने स्वर्गदूतों को अपनी गिरफ्तारी को रोकने के लिए बुलाना नहीं था। स्वर्गदूतों का आना न्याय के दिन के लिए ठहराया हुआ था; वे मसीह के साथ होंगे और दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे (13:41; 16:27; 24:31; 25:31)।

आयत 54. यदि यीशु लड़ाई करना चाहता तो वह जबर्दस्त शक्ति और बल का इस्तेमाल कर सकता था, परन्तु **पवित्र शास्त्र** की बातें पूरी न होती। पुराने नियम का यीशु का हवाला सामान्य बात है, क्योंकि उसने किसी विशेष आयत की बात नहीं की। शायद उसके दिमाग में अभी भी जकर्याह 13:7 था कि ''मैं चरवाहे को मारूंगा और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी'' (26:31)। उसने अन्त में क्रूस पर मृत्यु की बात की होगी (देखें भजन संहिता 22:16-18; यशायाह 53:4-12)

भीड़ को यीशु की डांट (26:55, 56)

[55]उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा; क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे डाकू के समान पकड़ने के लिए निकले हो? मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। [56]परन्तु यह सब इसलिए हुआ है, कि भविष्यवक्ताओं के वचन पूरे हों: तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।

आयत 55. यीशु ने यह पूछते हुए कि वे उसे **तलवारें और लाठियां लेकर** क्यों पकड़ने आए हैं जैसे वे किसी **डाकू** को पकड़ने आए हों, अपना ध्यान **भीड़** की ओर किया। ''डाकू'' (*lēistēs*) शब्द का अर्थ ''बदमाश'' या ''लुटेरा'' हो सकता है (21:13; लूका 10:30, 36; यूहन्ना 10:1, 8; 2 कुरिन्थियों 11:26)। इस प्रकार का चोर हिंसा और जबर्दस्ती का इस्तेमाल करने से हिचकिचाता नहीं था।[11] यदि यीशु ऐसा व्यक्ति होता तो ''तलवारें और लाठियां'' लाना उचित होता। परन्तु वह तो शांति पसन्द व्यक्ति था।

Lēistēs शब्द का अर्थ ''विद्रोही'' या ''क्रांतिकारी'' भी हो सकता है। जोसेफस ने

जेलोतेसों के लिए जिन्होंने रोमी शासन के विरुद्ध विद्रोह किया था इसी शब्द का इस्तेमाल किया। ये लोग जिनमें से कुछ अपने आपको मसीहा बताते थे, आमतौर पर अपने ही लोगों से वे छीन लेते थे जिनकी उन्हें आवश्यकता होती थी।[12] बरअब्बा के लिए जिसे यीशु के बदले में छोड़ा गया था (यूहन्ना 18:40) और दो अन्य लोगों के लिए जो यीशु के दोनों ओर क्रूस पर चढ़ाए गए थे (27:38, 44) इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया। यह मान लिया गया है कि ये तीनों विद्रोही थे। शायद यीशु यह स्पष्ट कर रहा था कि वह इनमें से नहीं था; उसका राज्य इस जगत का नहीं था। वह रोम के विरुद्ध बगावत नहीं कर रहा था इसलिए इन सिपाहियों और याजकों के लिए जो उस निहत्थे को पकड़ने के लिए आए थे तलवारें और लाठियां लाने का कोई औचित्य नहीं था।

गुप्त ढंग से लूटने वाला या विद्रोही होने के विपरीत यीशु अपनी सेवकाई सबके सामने करता था। उसने कहा, **''मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा।''** उन्होंने उसे इस कारण नहीं पकड़ा था क्योंकि वे लोगों से डरते थे (21:46; देखें 14:5; 21:26)। शायद यीशु के कहने का अर्थ यह था कि उसका विरोध करने वाले अंधेरे का लाभ उठाकर उसे पकड़ने के लिए गुप्त ढंग से आकर उन लुटेरों जैसा काम कर रहे थे।

आयत 56. उनकी हिंसा चाहे बेतुकी थी पर यीशु को मालूम था कि यह आवश्यक थी क्योंकि **यह सब इसलिए हुआ है, कि भविष्यवक्ताओं के वचन पूरे हों**। उसके मन में यशायाह 53 होगा जिसमें भविष्यवाणी की गई थी कि दुखी सेवक ''जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय'' और ''अपराधियों के संग गिना'' जाना था (यशायाह 53:7, 12)।

जब सिपाहियों ने यीशु को गिरफ्तार कर लिया तो ठीक जैसे उसने भविष्यवाणी की थी **तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए** (26:31 पर टिप्पणियां देखें)। वे इस बात से निराश थे कि यीशु ने अपने शत्रुओं को भगाने और उनकी पकड़ से बचने के लिए आश्चर्यकर्म करने की अपनी शक्ति का इस्तेमाल नहीं किया। घबराए और परेशान चेले भाग गए।

टिप्पणियां

[1]दीपक और मशालें होने के अलावा, ''फसह के पूर्णमासी ने रात को इस कार्यवाही में मदद की होगी'' (जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री [आस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976], 150)। [2]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू*, न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुसेट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 244. [3]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू*, पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 674. [4]सुझाव दिया गया है कि यीशु अपने चेलों को चेतावनी देते हुए कि उनके आगे भयंकर समय हैं, प्रतीकात्मक भाषा का इस्तेमाल कर रहा था। परन्तु लगता है कि उसका इरादा आवश्यकता पड़ने पर अपने बचाव में तलवारों का इस्तेमाल करने का था। [5]माउंस, 245. [6]डब्ल्यू. एफ. अल्ब्राइट एंड सी. एस. मन, *मैथ्यू*, द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: डबलडे एंड कं., 1971), 329. उन्होंने हंस कोसमाला, ''दस टूट ज़ु मेनेम गेढाकनिस,'' *नोवुम टैस्टामेंटम* 4 (अप्रैल 1960): 81–95 का हवाला दिया। [7]वही। [8]कुछ देर पहले, गतसमनी में एक ऐसे ही स्वर्गदूत ने उसे सामर्थ दी थी (लूका 22:43)। [9]मौरिस, 676. [10]अंक ''बारह'' का महत्व है; हर व्यक्ति के लिए एक पलटन होनी थी (यीशु के साथ ग्यारह और प्रेरित)।

[11]सामान्य ''चोर'' के लिए शब्द (*kleptēs*) है। [12]*थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट*, संपा. गरहर्ड किट्टल एंड गरहर्ड फ्रैडरिक, सं. व अनु. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 532.